उपसंहार

उपसंहार

" स्वदेश दीपक के नाटकों का समीक्षात्मक अध्ययन "('कोर्टमार्शल' और 'काल कोठरी'के विशेष संदर्भ में) के अध्ययन करने के उपरांत निष्कर्ष के रूप में जो तथ्य सामने आये हैं उनका निचोड यहाँ सार रूप में प्रस्तुत हैं।

स्वदेश दीपक : व्यक्तित्व एवं कृतित्व :–

रचनाकार का साहित्य उसके अध्ययन, मनन, चिंतन, अनुभवों का निचोड होता हैं जो प्रतिभा का स्पर्श पाकर कलात्मक उचाईयाँ प्राप्त कर अभिव्यक्ति पाता हैं। अतः मैंने प्रथम अध्याय में स्वदेश दीपक जी के जीवन का परिचय दिया हैं।

स्वदेश दीपक ' व्यक्तित्व एवं कृतित्व ' पर दृष्टिपात करने पर मेरा यह निष्कर्ष हैं कि दीपक जी का जन्म रावलपिंडी (पाकिस्तान) में हुआ। बटवारे के कारण उनके परिवार को राजपूरा (पंजाब) में आना पडा। दीपक जी का बचपन घोर संघर्ष और दारिद्रय में बीता। अपने संघर्षशील स्वभाव के कारण वे सफल अध्यापक बनें। संघर्ष, दारिद्रय तथा सामाजिक विषमता को नजदिक से देखने तथा अनुभव करने से उनका नॉटक साहित्य यर्थाथ और वास्तव जीवन की अभिव्यक्ति लगता हैं तथा पाठक के हृदय को छू लेने की क्षमता रखता हैं। उनके साहित्य का महत्वपूर्ण तथ्य मृत्यु हैं। उन्होंने नाटक के साथ–साथ उपन्यास, कहानी, टेलिफिल्म, संस्मरण आदि विधाओं में भी लेखन किया हैं इससे उनकी बहुविध प्रतिभा का पता चलता हैं। दीपक जी आधुनिक काल के हिंदी नाट्य सृष्टि के सशक्त नाटककार हैं। उनके सभी नाटकों का सफलता से मंचन हो चुका हैं। हिंदी साहित्य निर्माण के क्षेत्र में दीपक जी का विशिष्ट स्थान बन गया हैं जो अपनी एक अलग पहचान रखता हैं। उनकी यह पहचान पाठकों को प्रभावित किये बिना नहीं रहती ।

स्वदेश दीपक के नाटकों का सामान्य परिचय :–

नाटककार स्वदेश दीपक ने नाटकों का विवेचन करने के पश्चात निष्कर्षतः कहा जायेगा कि उनके नाटकों का मुल स्वर समाज में व्याप्त भ्रष्ट नितीयों का पर्दाफाश करना, साथ ही राजनिती का शोषण मूलक स्वरूप समाज को दिखाना तथा समाज में परिवर्तन लाना हैं । भारतीय समाज के तीनों स्तरों के परिवारों तथा उनमें व्याप्त समस्याओं का, विसगतियों का चित्रण दीपक जी ने अपने नाटकों में बखुबी के साथ किया हैं । साथ ही इन तीनों वर्ग के लोगों की मानसिकता का चित्रण किया हैं। विवेच्य नाटकों के अधिकांश पात्र समस्या ग्रस्त हैं। उनके नाटक साहित्य पर अंग्रेजी का प्रभाव अधिक दिखाई देता हैं। उनके सभी नाटक प्रायः सामाजिक नाटक की शृंखला में आते हैं। विवेच्य नाटकों के संवाद कथावस्तु का विकास करने में सफल हैं । ये सारे संवाद पात्रों के चरित्र को स्पष्ट करने में सक्षम हैं। विवेच्य नाटकों की भाषा में संस्कृत के तत्सम, तद्भव और देशज शब्दों के प्रयोग

के साथ–साथ अरबी, फारसी तथा अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी किया हैं। इन नाटकों में आत्मकथनात्मक और कथात्मक शैली का प्रयोग किया हैं। विवेच्य नाटक अपने उद्देश्य को स्पष्ट करने में सफल हुए हैं। दीपक जी के सभी नाटक रंगमंचीय एवं अभिनेय गुणों से सफल नाटक हैं।

"कोर्टमार्शल" और "काल कोठरी" नाटकों का शिल्पगत अध्ययन :–

' कोर्टमार्शल ' शिल्प, शैली एवं प्रस्तुति की दृष्टि से नितांत नवीनता बरतने वाला नाटक हैं। प्रस्तुत नाटक को तत्वों के आधार पर विवेचन करने पर निष्कर्षतः कहा जायेगा कि दो अंको में विभाजित इस नाटक का नायक रामचंदर हैं, जो नीचली जाति का होने के कारण उच्चवर्गीय अफसरोंके शोषण का शिकार बना हैं। जिसके विद्रोह करने पर हमारे सेना प्रशासन के सभी शोषण तंत्र के जिम्मेंदार और भ्रष्टाचारी अफसरोंके असली चेहरा और जातियता से पीडीत लोंगो की तथा नारी की यर्थाथ वास्तव स्थिति सबके सामने आती हैं। प्रस्तुत नाटक पात्रों के चरित्र–चित्रण के निकष पर भी खरा उतरता हैं । नाटक के संवाद सरल, सहज और अंग्रेजी भाषा से मिश्रित हैं । नाटक की भाषा फौजी हिंदी हैं । संवाद इस नाटक के प्राण बने हैं। नाटक में लघु और दिर्घ संवाद हैं। नाटक में देशकाल–वातावरण का ध्यान रखा गया हैं। नाटक की सभी घटनायें अंतिम पार्टी के छोटे दृश्य को छोडकर एक ही जगह पर घटित हुई हैं। देशकाल–वातावरण की दृष्टि से यह कृति पूर्ण सफल हैं। भाषा में कथ्य की गहराई तथा चरित्रों का विकास करने की क्षमता आयी हैं। भाषा में व्यंगात्मकता, नाट्यनुरूपता, विषयानुकूलता, संवेदनशिलता, प्रौढता, सरलता आदि सभी गुण विद्यमान हैं।

कथावस्तु के दोहरे आयाम एवं नाटक का कोर्टमार्शल के भीतर और एक अंतरात्मा के सामने होनेवाले कोर्टमार्शल का प्रयोग करके नाटककार ने अपने नाटकीय कौशल का परिचय दिया हैं।

' काल कोठरी ' नाटक में भी शिल्पशैली एवं प्रस्तुति की दृष्टि से नवीनता बरती हैं। प्रस्तुत नाटक का तत्वों के आधार पर विवेचन करके हम इस निष्कर्ष तक पहुँचे हैं कि नाटक की कथावस्तु तीन अंको में विभाजित हैं। प्रस्तुत नाटक रंगजीवी कलाकार रजत के जीवन की त्रासद कथा हैं। सुगठित चरित्रांकन नाटक की खास विशेषता हैं । इससे प्रस्तुत नाटक चरित्र चित्रण के निकष पर खरा उतरता हैं। नाटक के संवाद सरल, सहज और अंग्रेजी भाषा से मिश्रित हैं। व्यंगात्मक संवादों के माध्यमों से लेखक समाज व्यवस्था पर चोट करता हैं। इससे नाटक की रोचकता बढी हैं। नाटक में पात्रों के परस्पर संवादों द्वारा तथा मानसिक अंर्तद्वद्व के चित्रण द्वारा वातावरण निर्माण करने का प्रयास किया हैं। नाटक

की भाषा भी भाव को सहजता से संप्रेषित करती हैं। नाटक के भीतर और एक नाटक होने पर भी कथानक कहीं भी बिखरा हुआ नहीं लगता।

अतः तत्वों के निकष पर दीपक जी के विवेच्य नाटक खरे उतरतें हैं।

"कोर्टमार्शल" और "काल कोठरी" नाटकों में चित्रित समस्याएँ :–

विवेच्य नाटकों में चित्रित समस्याओं का अध्ययन करने के पश्चात निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता हैं कि स्वदेश दीपक जी के नाटको में चित्रित आम जनता को आधुनिक युग में कई समस्याओं का सामना करना पडा हैं।

नाटक ' कोर्टमार्शल' में युगयुग से पीडित, शोषित, दलित निम्न जाति के लोगों के जीवन की अभिव्यक्ती हैं, जो निम्न जाति के परिवेश का दाहक वास्तव चित्र उजागर करती हैं। कानून की सीमा तथा असमर्थता के साथ–साथ सेना प्रशासन से आम जनता को परिचित करना प्रस्तुत नाट्कृति का प्रमुख उद्देश्य रहा हैं। उच्चवर्ग किसप्रकार विभिन्न हथकंडे अपनाकर निम्न वर्ग का शोषण करता हैं इसका वास्तव चित्र ' कोर्टमार्शल' के कैप्टन कपूर के द्वारा प्रस्तुत किया हैं। प्रशासन व्यवस्था, उच्च वर्ग की अफसरी सभ्यता को तथा नारी पर हो रहैं अत्याचार को दिखाना नाटककार दीपक जी का प्रमुख उद्देश रहा हैं। आज आधुनिक स्वतंत्र भारत में न्याय व्यवस्था गवाह और सबूतों के अर्धसत्य पर टिकी हुई हैं, इसीकारण सामान्य जनता पर अन्याय–अत्याचार हो रहा हैं। निम्नवर्ग में पैदा हुए बेबस रामचंदर की दयनीय हालत तथा सामंती प्रवृतियों द्वारा शोषित मिसेस कपूर पाठक के मन को झकझोर देती हैं। आधुनिक युग में भी उच्चवर्ग 'वंश महिमा' को सर्वोपरि मानते हैं तथा निम्न वर्ग को अपना गुलाम समझते हैं, जातियता की इस ज्वलंत समस्या का चित्रण दिपक जी ने अत्यंत सफलात से किया हैं। इसके साथ ही भ्रष्टाचार, अहंकार, काम, लालच आदि समस्याएँ भी नाटक में यथार्थता से प्रस्तुत की गयी हैं।

नाटक 'काल कोठरी' रंगजीवी कलाकारों की विवशता, राजनीति के सामने पराभूत हानेवाली दयनीयता हो उजागर करता हैं। कला का मंदीर (थियेटर) किसतरह कलाकारों के लिए 'काल कोठरी' बन जाता हैं, इसका चित्रण दीपक जी ने प्रस्तुत नाटक में किया हैं।

आधुनिक युग में कला की कदर न होने से कलाकार को उपेक्षित रहना पडता हैं। "काल कोठरी" का रजत उपेक्षीत कलाकार की समस्या से पीडित हैं। कला की उपेक्षा के कारण अर्थाभाव तथा परिवारिक समस्याओं का सामना रजत और उसके परिवार को करना पडा हैं। सच तो यह हैं कि व्यक्ति के अत्यधिक समस्याओं की जड आर्थिक समस्या में ही होती हैं। आर्थिक अभाव के कारण रिटायर्ड पिता को भी नौकरी करनी पडती हैं साथ ही तथा परिवारिक जीवन में तँणाव का सामना करना पडता हैं इसका सफल चित्रण दीपक जी ने किया हैं।

साहित्यिक समस्या का चित्रण लेखक नवीन जी के माध्यम से प्रस्तुत किया गया हैं। प्रेम के खोखले आदर्श की समस्या, नौकरी के लिए सिफारिश आदि समस्याओं को भी नाटककार ने बडी सफलता से प्रस्तुत किया हैं।

"कोर्टमार्शल" और "काल कोठरी" नाटकों की रंगमंचीयता :–

नाटक की प्रायोगिकता का मूल आधार रंगमंच है । विषय तथा कथ्य की दृष्टि से उत्तम कोटि का नाटक कोर्टमार्शल मंचीय प्रस्तुति में प्रभावी और यशस्वी हो चुका है । नवताग्रही मंचीय युक्तियों से मुक्त कथानुरूप शिल्प–शैलियों को अपनाये हुये विवेच्य नाटक अपनी समकालीन व्यवस्था के असली रूप को प्रस्तुत करने में सफल हुए है । नाटक कोर्टमार्शल और "काल कोठरी" रंगमंच और अभिनय की दृष्टि से सफल नाट्य कृतियाँ है ।

विवेच्य नाटकों में नाटककार ने अभिनय संबंधी पर्याप्त रंग–निर्देश दिये है । कायिक, वाचिक अभिनय के साथ–साथ सात्विक अभिनय के भी अनेक अवसर प्रदान किये है । रूप–सज्जा तथा दृश्य–सज्जा विषयक समग्र रंग संकेत नाटककार ने दिये है। दृश्य के अनुरूप तथा आर्थिक स्तर के अनुरूप परिवर्तित रूप–सज्जा विषयक संकेत नाटककार ने दिये है। विवेच्य दोनों नाटकों के मंचन के लिए दो प्रकार की दृश्य–सज्जा आवश्यक है। लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रथम प्रकार की दृश्य–सज्जा में हलके–फुलके परिवर्तन से दूसरे प्रकार की दृश्य–सज्जा तैयार की जा सकती है । सहज दृश्य–सज्जा विवेच्य नाटकों की विशेषता है।

विवेच्य नाटको में नाटककार ने प्रकाश योजना का प्रयोग अंक तथा दृश्य विभाजन के साथ–साथ वातावरण निर्मिती के लिए भी किया है । ध्वनि योजना का उपयोग प्रसंग, घटना के अनुरूप किया गया है । विवेच्य नाटक दर्शकीय संवेदना को झकझोर देनेवाले तथा दर्शक को प्रभावित करने में सफल हुए है । उपर्युक्त दोनों नाटकों का सफल मंचन हो चुका है ।

अतः दीपक जी के विवेच्य नाटक अभिनेयता और रंगमंचीयता की दृष्टि से अत्यंत उत्कृष्ट और सफल रहे हैं ।

प्रस्तुत शोधकार्य की उपलब्धियाँ :–

1) स्वदेश दीपक आधुनिक हिंदी साहित्य में समाज में व्याप्त सामाजिक समस्याओं को केंद्र बिंदु में रखकर लिखनेवाले नाटककारों में शीर्षस्थ हैं।
2) दीपक जी के नाटको में चित्रित शोषित वर्ग की समस्याएँ केवल लेखकीय दस्तावेज न होकर प्रासंगिक लगती हैं।

3) आधुनिक स्वतंत्र भारत में समाज के सभी लोगों को समान अधिकार हैं और वह कोई छीन नहीं सकता। विवेच्य नाटकों के अध्ययन की यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि माननी होगी ।
4) समाज में स्त्री के प्रति आदर और सम्मान की भावना रहनी चाहिए । साथ ही उसको बराबर का दर्जा मिलना चाहिए।
5) समाज में रहनेवाले हर व्यक्ति को हर समय संघर्षशील होना चाहिए।
6) जातियता, अंधश्रध्दा जैसी अनिष्ट प्रथा को उखाडकर फेंक देना चाहिए।

प्रस्तुत लघु शोध–प्रबंध की ये महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ माननी होगी।

अध्ययन की नयी दिशाएँ :–

1) स्वदेश दीपक के नाटकों में चित्रित समस्याओं का अनुशीलन ।
2) स्वदेश दीपक के ' नाटक बाल भगवान ' का समीक्षात्मक अध्ययन।
3) स्वदेश दीपक के नाटको में युग चेतना।
4) स्वदेश दीपक के नाटकों में चित्रित यर्थाथता, मनोवैज्ञानिकता, राजनीतिज्ञता।
5) स्वदेश दीपक के नाटकों में चित्रित नारी ।